गलत दलील

रजि० नं० बी ४४४८
ला०अिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ३२

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० ८ अक्तूबर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

खादी हुंडियां खरीदो

[भारतके राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्रप्रसादने गांधी जयंतीके अवसर पर नीचेकी अपील निकाली है।]

हम बरसोंसे गांधीजीका जन्मदिन 'चरखा जयंती' के रूपमें अुत्साहपूर्वक मनाते आ रहे हैं। महात्मा गांधी स्वयं यह चाहते थे कि अुनके जन्मका दिन अुनकी जयंतीके तौर पर न मनाया जाय, बल्कि 'चरखा जयंती' के तौर पर माना और मनाया जाय। अिस कारणसे अुस दिन सारे देशमें सामूहिक कताअी की जाती है और खादीको लोकप्रिय बनानेका प्रयत्न किया जाता है। अिस साल भी हमें यह दिन अुत्साह, श्रद्धा और समर्पणकी भावनासे मनाना है।

खादी अिसलिअे ज्यादा महंगी है कि कत्तिनोंको अुचित मजदूरी देनी होती है। अिसलिअे भारत-सरकार खादीके अुत्पादन और बिक्रीके लिअे आर्थिक मदद दे रही है, ताकि खादीके दाम नीचे लाये जा सकें, और साथ ही अुसका अुत्पादन बढ़ सके।

अपने जीवनकालमें गांधीजी बार बार हमारे सामने खादी-अुत्पादनकी वृद्धिके लाभ रखते रहे। खादी-कार्यके अनेक पहलुओंमें सबसे महत्त्वका पहलू यह है कि अिसके जरिये बहुत बड़ी संख्यामें लोग अपनी रोटी कमा सकते हैं, खास करके अैसे लोग जो दूसरा कोअी काम करनेमें असमर्थ हैं, लेकिन जो अपने हाथसे काम करके जीविका कमा सकते हैं। अिस दृष्टिसे खादीका प्रचार बहुत जरूरी माना गया है।

शुरू शुरूमें कांग्रेसके नेता और दूसरे कांग्रेसी कार्यकर्ता खादीका प्रचार करने और अुसे लोकप्रिय बनानेके लिअे घर-घर जाकर खादी बेचते थे। लेकिन अब बेचनेवालों और खरीदनेवालोंकी सुविधाके लिअे अेक अनोखा तरीका निकाला गया है। अब लोग अपनी पसन्दकी खादी अपनी सुविधासे खरीद सकते हैं। अिसे आसान बनानेके लिअे, खादी हुंडियोंकी बिक्री अिस बातका मापदंड बन जाती है कि जयंतीके दिनोंमें कितनी खादी बेची गअी है।

मेरा विश्वास है कि लोग स्वेच्छापूर्वक प्रेम और समर्पणकी भावनासे खादी हुंडियां खरीदेंगे। ये हुंडियां कितनी भी रकमकी खरीदी जा सकती हैं और अुनके बदलेमें अपनी पसन्दकी खादी खरीदी जा सकती है।

मुझे आशा है कि भारतके लोग बड़ी संख्यामें ये हुंडियां खरीदेंगे। मैं अुनकी देशभक्ति और देशप्रेमसे अपील करता हूं कि वे हुंडियां और खादी खरीदकर यह जयंती मनायें और अिस तरह खादीके ध्येयको मदद पहुंचायें।

(अंग्रेजीसे)

शिक्षा क्यों और कैसे ?

[ता० २०–८–'५५ को तेरुवली पड़ाव पर दिया गया प्रार्थना-प्रवचन।]

आजकल बहुतसे लोग कहते हैं कि तालीममें स्वावलंबनका बहुत महत्त्व है। पर मेरे मनमें अिसका बहुत गहरा अर्थ है। तालीममें कुछ अुद्योग और शरीर-परिश्रम सिखाना चाहिये, ताकि जनता स्वावलंबी बने, अितना ही मेरा अर्थ नहीं है। शरीर-परिश्रम तो करना ही चाहिये और हरअेकको अपने हाथसे काम करनेका ज्ञान भी देना चाहिये। अगर सब लोग हाथोंसे कुछ-न-कुछ परिश्रम करने लग जायेंगे, तो देशमें वर्ग-भेदका निर्माण नहीं होगा, देश सुखी होगा, अुत्पादन भी बढ़ेगा और आरोग्य भी सुधरेगा। अिस तरह अुद्योगसे बहुत लाभ होंगे। अिसलिअे कमसे कम अुस अर्थमें तो तालीममें स्वावलंबनका माद्दा होना ही चाहिये, अिस बातको सब लोग समझते हैं। परन्तु मेरा अर्थ अितना ही नहीं है।

विद्यालयोंका कर्तव्य

मैं मानता हूं कि तालीममें अैसा तरीका अख्तियार करना चाहिये, जिससे कि लड़कोंकी प्रज्ञा स्वयं बने और लड़के स्वतंत्र विचारक बनें। अगर विद्यामें यही मुख्य दृष्टि रही, तो विद्याका सारा स्वरूप ही बदल जायेगा। आजकल हमारे विद्यालयोंमें अनेक भाषाअें और अनेक विषय सिखाये जाते हैं। हर बातमें विद्यार्थीको वर्षों तक शिक्षककी मददकी आवश्यकता महसूस होती है। परन्तु विद्यार्थियोंको अिस तरह तालीम मिलनी चाहिये कि जिससे विद्यार्थी आगे खुद होकर ज्ञान प्राप्त कर सकें। दुनियामें अनन्त ज्ञान है। जीवनके लिअे अुस अनन्त ज्ञानकी आवश्यकता नहीं होती है, तो भी काफी ज्ञानकी आवश्यकता होती है। लेकिन जो जीवनोपयोगी ज्ञान होता है, वह किसी स्कूलमें हासिल हो सकता है, यह विचार गलत है। जीवनके लिअे अुपयोगी ज्ञान तो जीवनसे ही हासिल होता है। विद्यार्थियोंमें यह ज्ञान हासिल करनेकी शक्ति निर्माण करना ही विद्यालयोंका काम है।

सारे आलम्बनोंसे मुक्ति

माता-पिता लड़केकी स्कूलकी विद्या पूरी करनेका आग्रह अिसलिअे करते हैं कि विद्या पानेके बाद अुसे नौकरी मिल सकती है और अुसका जीवन अच्छी तरह चल सकता है। लेकिन विद्याकी तरफ अिस दृष्टिसे देखना बिलकुल गलत है। विद्या जीवनकी अेक मौलिक वस्तु है। कहा गया है कि विद्या तो मुक्तिके लिअे है। अिसी मुक्तिको आजकल हम स्वावलंबन कहते हैं। अन्य आलंबनोंसे, अन्य सारे आधारोंसे मुक्तिको ही स्वावलंबन कहा जा सकेगा। जिसको सच्ची विद्या हासिल होती है, वह सच्चे अर्थमें मुक्त और स्वतंत्र होता है। अिसलिअे शरीरके वास्ते कुछ तालीम मिलनी चाहिये, और अुसके लिअे कुछ अुद्योग सिखाये जाने

www.vinoba.in

चाहियें, यह तो स्वावलंबनका कमसे कम अंग है। नये ज्ञानकी प्राप्तिकी शक्ति हासिल होना, यह अुसका अेक बड़ा महत्त्वका हिस्सा है। मुक्तिके लिअे अेक और तीसरी बातकी जरूरत है, जो शिक्षणका ही अेक अंग है। जैसे मुक्तिके लिअे पराधीनता अुचित नहीं है, वैसे मुक्तिके लिअे विकारवशता भी अुचित नहीं है। जो मनुष्य अपनी अिन्द्रियोंका गुलाम है और विकारोंको काबूमें नहीं रख सकता है, वह स्वावलंबी या मुक्त नहीं है। अिसलिअे विद्याका यह तीसरा भी अेक अैसा अंग है, जिसके लिअे विद्यामें संयम, व्रत, सेवा आदिका समावेश करना पड़ता है।

स्वावलंबनके तीन अर्थ

अिस तरह स्वावलंबनके भी तीन अर्थ हैं। अपने अुदर-निर्वाहके लिअे दूसरों पर आधार रखना न पड़े, यह अुसका पहला अर्थ है। दूसरा अर्थ है, ज्ञान-प्राप्ति करनेकी स्वतंत्र शक्ति निर्माण हो। और तीसरा अर्थ है, मनुष्यमें अपने-आप पर काबू रखनेकी शक्ति हो। अिन्द्रियोंको और मनको वशमें करनेकी शक्ति होना जरूरी है। शरीरकी पराधीनता गलत है, मनकी पराधीनता गलत है और बुद्धिकी पराधीनता भी गलत है। शरीर पेटके वास्ते पराधीन बनता है। अिसलिअे मनुष्यको अपनी आजीविका संपादन करनेका ज्ञान अुद्योगके द्वारा मिलना चाहिये। अगर मनुष्यकी बुद्धि चिंतन और विचार करनेमें स्वतंत्र नहीं है, तो मनुष्य पराधीन बनता है। अिसलिअे अुसे स्वतंत्र चिंतनकी शक्ति हासिल होनी चाहियें। और मन तथा अिन्द्रियोंकी गुलामी मिटानेकी बात भी विद्यासे हासिल होनी चाहिये।

माता-पिता अपने लड़कोंकी विद्याके बारेमें सोचते समय ये तीन विचार यदि सामने रखें, तो अुन्हें बहुत सुख हासिल होगा। माता-पिताओंको अिसी बातसे सुख मिलता है कि अुनके बच्चे सुखी और समर्थ हों और लोगोंमें अुनके लिअे अिज्जत हो। पर केवल लड़कोंको नौकरी मिल गअी और अुनकी शादी वगैराका अिन्तजाम हो गया तो अुनके लिअे सारी व्यवस्था हो गअी, अैसा मानना अुचित नहीं है।

('भूदान-यज्ञ' से) **विनोबा**

'नींवमें से निर्माण' — ६

[ता० २७-८-'५५ के अंकके अनुसंधानमें]

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण या विकासकी किसी भी योजनामें सरकारके हिस्सेका काफी महत्त्व है। अितना ही नहीं, कुछ हद तक वह जरूरी भी है। नींवमें से निर्माणकी योजनाके लिअे भी यह बात लागू होती है, यद्यपि अिस योजनाको स्वाधीन काम-धंधेके आधार पर और स्वाधीन काम-धंधा करनेवाले परिवारोंकी — "जो जहां आज वे रहते हैं वहीं रहेंगे" — बहुधंधी सहकारी समितियोंके जरिये खड़ा करनेका अुद्देश्य रखा गया है। सहकारकी पूर्व-शर्त है कि लोग अपने प्रश्न अपने प्रयत्नसे हल करनेके लिअे तैयार हों और अुसके लिअे स्वेच्छापूर्वक मेहनत करें। सहकारी संघटनको सफलतापूर्वक चलानेके लिअे अमुक योग्यता और बुद्धिकी आवश्यकता होती है। यह योग्यता और बुद्धि लोगोंको ही प्रगट करनी चाहिये; सरकार अुन्हें यह चीज नहीं दे सकती। यह सब सही है। लेकिन, जैसा कि प्रस्तुत पुस्तिका कहती है:

> "स्वतंत्र काम-धंधेवाले विभागकी प्रवृत्तियोंके संचालन और मार्गदर्शनके लिअे जो संस्थागत ढांचा चाहिये अुसके निर्माण और संघटनमें सरकार महत्त्वपूर्ण भाग अदा कर सकती है।"

सरकार यह मदद किस तरह दे? पहले अुसे अपनी नीतिकी घोषणा करके यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि —

> "विकासके कार्यक्रमका अन्तिम लक्ष्य, ज्यों-ज्यों स्वाधीन काम-धंधेवाले विभागकी योग्यता बढ़ती जाय, त्यों-त्यों पहली आवश्यकताकी वस्तुओंके अुत्पादनका काम अुस विभागको ही सौंप देनेका है।" (पृष्ठ ६५, पैरा ७५)

औद्योगिक अर्थरचनाके जिस ढांचेको लोग अपने लिअे स्वीकार करेंगे, अुसके बारेमें राष्ट्रको अेक तरहकी आर्थिक या औद्योगिक सूचना देनेके लिअे अुपरोक्त नीतिकी घोषणा जरूरी है।

> "अैसी घोषणा हो जाय तो अुससे अेक ओर स्वाधीन काम-धंधेवाले विभागको अपनी बढ़ी हुअी जिम्मेदारियां संभालनेके लिअे अपना नया संघटन करने और तैयारी करनेकी सही प्रेरणा मिलेगी और दूसरी ओर खानगी विभागको मालूम हो जायगा कि वह पहली आवश्यकताकी वस्तुओंके बाजारसे कानूनन् हट जानेके लिअे बाध्य हो गया है। अिसका फल यह होगा कि वह अुससे धीरे धीरे अिस तरह हट जानेकी योजना करनेके लिअे तैयार हो जायगा कि जिससे अुसे नुकसान न सहना पड़े। लेकिन चूंकि फिलहाल स्वाधीन काम-धंधेवाले विभागके पास अुत्पादनकी आवश्यक योग्यता नहीं है अिसलिअे सरकारको अेक ओर तो कार्यक्रमको फुर्तीके साथ कार्यान्वित करके अुसकी अुत्पादक योग्यताका निर्माण करना चाहिये और दूसरी ओर खानगी विभागके लिअे अुत्पादनके लक्ष्य निर्धारित कर देना चाहिये, ताकि अुपभोक्ताओंका हित सुरक्षित रहे।" (पैरा ७६)

यहां यह याद रखना अच्छा होगा कि औद्योगिक प्रयत्नका यह विभाजन पहली आवश्यकताकी वस्तुओं, यानी अन्न, वस्त्र आदिके लिअे ही किया गया है। अुससे राष्ट्रको न सिर्फ अैसा बढ़ता हुआ काम-धंधा प्राप्त होगा जो सब लोगोंको दिया जा सके, बल्कि अुससे अधिकतम अुत्पादन और सारी जनतामें संविभाजित बंटवारा भी संभव बनेगा। जैसा कि प्रस्तुत पुस्तिका बतलाती है:

> "अगर पहली आवश्यकताकी वस्तुओंका अुत्पादन सुरक्षित कर दिया जाय और कार्यक्रमके अनुसार विकास-संबंधी मदद भी दी जाय, तो स्वाधीन काम-धंधेवाले विभागको वे आवश्यक परिस्थितियां मिल जायगीं जिन पर वह टिका रह सकता है और आगे अुन्नति भी कर सकता है। पहली आवश्यकताकी वस्तुओंके बाजार विशाल हैं, — सुस्थिर हैं, और भारतकी जनसंख्याकी बढ़तीको देखते हुअे वृद्धिशाली भी हैं। जब तक जहां जरूरत हो वहां अुपयुक्त औजारोंकी पूर्तिके जरिये निर्माण पद्धतिमें सुधार करना संभव होता रहेगा, तब तक अुत्पादित मालके गुणमें सुधार आसानीसे किये जाते रहेंगे।" (पैरा ७७)

अिनके सिवा सरकारकी ओरसे अेक तरफ तो "आर्थिक सहायता, कर्ज, सबसिडी आदि देनेके और दूसरी तरफ यंत्र-अुद्योगोंके माल पर सेस लगाने और अुत्पादनके क्षेत्रोंको सुरक्षित करनेके कदम" अुठाये जाने चाहिये। (पैरा ७८) वे "सामाजिक लक्ष्योंकी प्राप्तिको सुनिश्चित बनानेके लिअे व्यापक आर्थिक नियंत्रणकी आवश्यकता बतलाते हैं। अलग अलग कैसे और कितने नियंत्रण जरूरी होंगे, यह बताना तो संभव नहीं है, पर अेक अुदाहरण दिया जा सकता है। परिवर्तन-कालमें सामाजिक दृष्टिसे आवश्यक वस्तुओंका पर्याप्त अुत्पादन और न्यायपूर्ण बंटवारा होता रहे, और कार्यक्रममें बतायी हुअी अवस्थाओंके अनुसार औद्योगिक परिवर्तन भी आसानीके साथ संपन्न हो जाय, अिसके लिअे सरकारको कअी विशेष आर्थिक नियंत्रणोंकी खोज करनी होगी। बुनियादी नीति भी अर्थरचनाके प्रति अेक सर्वग्राही दृष्टिकी मांग करती है और फलतः सरकारके लिअे यह जरूरी हो जाता है कि वह लक्ष्योंके लिहाजसे अुपयुक्त नीतियां और नियंत्रण निर्धारित करे।

> "बहुधंधी सहकारी समितियां अपना कार्य सफलतापूर्वक कर सकें, अिस अुद्देश्यसे अुन्हें मदद करनेके लिअे भी व्यापक आर्थिक नियंत्रण जरूरी हैं। कच्चे माल और कर्जका प्रान्तवार बंटवारा और पूर्ति तथा स्वतंत्र काम-धंधेवाले विभागको कार्यक्रमके अनुसार बहुधंधी सहकारी समितियों अथवा ग्रिड

www.vinoba.in

प्रणालीके जरिये बाजारकी सुविधाअें देना आदि कार्योंमें जगह जगह नियंत्रणोंकी आवश्यकता होगी, ताकि आर्थिक परिवर्तन आसानीसे हो सकें और विकास अभीष्ट दिशामें होता रहे।

"सारांशमें : (प्रस्तुत पुस्तिकाके) पांचवें अध्यायमें वर्णित विकासके कार्यक्रमको कार्यान्वित करना सुस्पष्ट सामाजिक और आर्थिक लक्ष्यों पर आधारित अुपयुक्त नीतियोंके निर्धारण और पालन पर अवलंबित है। अिन नीतियोंके स्थायी अथवा अस्थायी प्रभावकारी अमलके लिअे समस्याओंके प्रति सर्वग्राही दृष्टि रखना और व्यापक आर्थिक नियंत्रणोंका जारी किया जाना बहुत जरूरी है।" (पैरा ८२, ८३, ८४)

राष्ट्रमें स्वाधीन काम-धंधेवाली अर्थरचनाकी यह नीति, खासकर औद्योगिक क्षेत्रमें, कठिनाअियोंसे खाली नहीं है। दूसरी कठिनाअियोंके सिवा, अुसे संघटित पूंजीवादके स्थापित स्वार्थोंके विरोधका मुकाबला भी करना होगा। प्रस्तुत पुस्तिका अिस बातका अुल्लेख करते हुअे कहती है :

"लेकिन हमारी अर्थव्यवस्थाके औद्योगिक विभागमें यह परिवर्तन आसानीसे नहीं होगा। अुसमें कअी जटिल सवाल खड़े होंगे और संभव है कि अुसका संघटित विरोध भी हो। अिसके दो कारण हैं : (१) अुत्पादनके क्षेत्र और बाजार सुरक्षित किये जायं और/या अमुक माल पर सेस लगाया जाय और अमुक पर सबसिडी दी जाय, अिस तरहकी मांगोंके सिवा नयी आर्थिक योजना तो अिस बातका आग्रह करती है कि पहली आवश्यकताकी वस्तुओंका अुत्पादन पूरा पारिवारिक कार्यालयों (वर्कशाप) को ही सौंप दिया जाय और अिस तरह वह भारतके बहुत बढ़े हुअे अुद्योगोंके अस्तित्वके लिअे खतरा अुपस्थित करती है। अपनी रक्षाके लिअे लड़ना स्वाभाविक है और अैसा मानना चाहिये कि ये अुद्योग संघटनपूर्वक और डटकर लड़ेंगे। (२) अिस तरहके परिवर्तनकी आवश्यकता स्वीकार कर ली जाय तब भी अिस सारी औद्योगिक प्रवृत्तिका पारिवारिक कार्यालयोंमें पहुंचना और जमना आसान नहीं होगा और हो सकता है कि बीचके कालमें अुतना माल पैदा न किया जा सके जितना आज होता है और जो पैदा हो वह अुतना अच्छा न हो जितना आज है। आलोचक लोग अैसी पुकार भी अुठा सकते हैं कि पारिवारिक कार्यालय अुत्पादनकी अमुक विधियोंका संपादन करनेमें अनुपयुक्त हैं। ये दोनों कारण अपने-आपमें ठीक हैं लेकिन वे पारिवारिक कार्यालयोंके आर्थिक विकासके कार्यक्रमका महत्त्व ठीक न समझ सकनेके कारण पैदा होते हैं। (पैरा ८७)

"कार्यक्रमके अनुसार पहली आवश्यकताकी वस्तुओंका केन्द्रित अुत्पादन खानगी विभागमें नहीं चलता रह सकता; अुसे स्वाधीन काम-धंधेवाले विभागको सौंपना होगा। लेकिन यह कार्य अेकदम नहीं बल्कि धीरे धीरे अमुक अवधिमें करना है; और अिस अवधिमें स्वतंत्र काम-धंधेवाले विभागकी अुत्पादक क्षमताका निर्माण करते रहना है और अुसे अिस जिम्मेदारीको अुठानेके योग्य बना देना है। अिस तरह सरकारकी औद्योगिक नीतिकी घोषणासे संघटित अुद्योगोंको अिस होनेवाली तबदीलीकी सूचना मिल जाती है और वे चाहें तो अपने वर्तमान संघटनको तोड़कर अुत्पादकोंकी विकेन्द्रित सच्ची सहकारी समितियोंका रूप ग्रहण कर सकते हैं या अनुकूल परिवर्तन करके किन्हीं दूसरी चीजोंके अुत्पादनका काम शुरू कर सकते हैं। अुत्पादन और बिक्रीके क्षेत्रोंसे संघटित अुद्योगोंका हटना और स्वाधीन काम-धंधेवाले विभागका धीरे धीरे अपना विस्तार और विकास करना, ये दोनों काम साथ-साथ हो सकते हैं। अगर संघटित अुद्योग अिस परिवर्तनको अनिवार्य समझकर अुसे स्वीकार कर लें तो वे अिस स्थितिमें अुन्हें क्या करना चाहिये अिसे ज्यादा अच्छी तरह सोच सकते हैं, कर सकते हैं, और ज्यादा नुकसानसे बच सकते हैं। अिसके सिवा, यदि वे चाहें तो पारिवारिक कार्यालयोंके विकासमें अुपयोगी और महत्त्वपूर्ण हिस्सा अदा कर सकते हैं। वे अुन्हें कअी तरहकी मदद दे सकते हैं : अुनके लिअे अुत्पादक औजारोंका निर्माण कर सकते हैं, अुत्पादन-संबंधी विधियां अुन्हें सिखा सकते हैं, अुनके संघटनमें मार्गदर्शन कर सकते हैं और अपने मौजूदा वितरण-तंत्रका लाभ अुन्हें दे सकते हैं। जो हो, अुन्हें अितना ही करने लिअे कहा जा रहा है कि वे पहली आवश्यकताकी वस्तुओंके बाजारोंसे हट जायं और प्रस्तुत कार्यक्रम अुन्हें अैसा कर सकनेके लिअे पर्याप्त समय भी देता है। किसी भी दृष्टिसे देखें यह तबदीली जरूरी है और वह होकर रहेगी। वह आसानीसे और बिना किसी अचड़नके हो सके, यह अधिकांशतः अिस बात पर निर्भर है कि अुद्योगोंको स्थितिका यथार्थ दर्शन कितना है।" (पैरा ८८)

प्रस्तुत योजना नयी अर्थरचनामें बड़े पैमानेवाले खानगी विभागके लिअे भी अवकाशकी कल्पना करती है। अुदाहरणके लिअे, वह कहती है :

"यद्यपि प्रस्तुत कार्यक्रम पहली आवश्यकताकी वस्तुओंका अुत्पादन खानगी विभागसे हटा लेता है, किंतु वह खानगी विभागको अर्थरचनामें महत्त्वपूर्ण स्थान प्रदान करता है। कार्यक्रम जैसा है, अुसमें अुत्पादनके औजारोंको, जिन्हें धीरे धीरे ज्यादा ज्यादा सुधारते रहना होगा, बड़े पैमाने पर पैदा करनेकी जरूरत होगी; ये औजार स्वाधीन काम-धंधेवाले बड़े बाजारकी आवश्यकताओंकी पूर्ति करेंगे। अभी तक यह बाजार अपेक्षाकृत छोटा था, अिसलिअे खानगी विभागको अुत्पादकोंके लिअे आवश्यक माल बनानेका काम कम करना पड़ा। लेकिन प्रस्तुत कार्यक्रम अैसे मालकी मांगको न केवल पैदा करता है बल्कि अुसे क्रमशः बढ़ाता भी जायगा। चूंकि अिन वस्तुओंका अुत्पादन बड़े पैमाने पर ही हो सकता है और अुसमें काफी पूंजी लगेगी तथा आरंभ-शक्ति, साहस, और कार्य-संपादनका कौशल आदि गुणोंकी आवश्यकता होगी, अिसलिअे वह खानगी विभागके लिअे बहुत अनुकूल सिद्ध होगा। (पैरा ९१)

"तबदीलीसे पैदा होनेवाला घर्षण अेक बार शान्त हुआ कि खानगी विभाग भी अिस स्वीकृत अर्थ-रचनामें ज्यादा विधायक हिस्सा अदा करना और नयी निर्माण-पद्धतियोंको पचानेकी अपनी क्षमताका विस्तार करना सीख लेगा। अपनी नयी कार्य-पद्धतिके अेक अंगकी तरह वह स्वाधीन काम-धंधेवाले विभागके साथ सहयोग करेगा, अुसे अपने वितरण-तंत्र और बिक्री-तंत्रका लाभ देगा और अिस अर्थरचनाके लिअे आवश्यक व्यवस्था-केन्द्रोंका निर्माण करनेमें मदद करेगा।" (पैरा ९२)

अिस तरह विशाल स्वाधीन काम-धंधेवाले विभाग और बड़े पैमानेवाले खानगी विभागका अेक तरहका सह-अस्तित्व संभव है। और अगर हम चाहते हैं कि हमारी सारी प्रजा अपना संघटन अैसी अेक अर्थरचनाके लिअे करे जो प्रतियोगिता-मूलक नहीं सहयोगितापूर्ण, संग्रहमूलक नहीं संतोषपूर्ण और केवल बहुजन-हितकारी नहीं सर्वजन-हितकारी हो तो यह आवश्यक और अनिवार्य भी है।

सारांश

"हमारी अर्थरचना अपनी आजकी व्यवस्था छोड़कर यहां पेश की गयी व्यवस्थाकी ओर अग्रसर और अन्तमें अुसीमें परिवर्तित हो जाय, अिस काममें अेक कठिनाअी तो केन्द्रित अुद्योगोंकी

www.vinoba.in

ओरसे होनेवाले संघटित विरोधकी होगी, दूसरी कठिनाअी अिस तबदीलीके कारण स्वभावतः पैदा होनेवाली जटिल समस्याओंकी होगी, जिन्हें अर्थरचनाके विविध विभागोंमें अुपयुक्त अनुकूलनके द्वारा हल करना होगा। ये समस्यायें जटिल तो होंगी लेकिन अुनमें से अधिकांशका हल न तो सरकारकी योग्यताके वाहर है और न हमारी मौजूदा अर्थरचनाके, बशर्ते कि अुनके प्रति वस्तुनिष्ठ दृष्टि रखी जाय। लेकिन अिन समस्याओंके हलकी सच्ची गारंटी तो जनताके अुस अुत्साहपूर्ण समर्थनमें प्राप्त होगी जिसे प्रस्तुत योजना देशमें पैदा करेगी।" (पैरा ९६)

१६-९-'५५ (समाप्त)

(अंग्रेजीसे) मगनभाई देसाई

हरिजनसेवक

८ अक्तूबर १९५५

'प्रगतिको पीछे ठेलने' की गलत दलील

'हरिजन' के अेक पाठकने अिस पत्रमें छपे अेक लेखके* बारेमें मेरा ध्यान अिन शब्दोंमें खींचा है:

"मैंने श्री प्रसादका 'विकेन्द्रीकरणकी गांधीजीकी कल्पना' नामक लेख ता० ३०-७-'५५ के 'हरिजन' में पढ़ा। मैं यह बताना चाहता हूं कि बर्ट्रान्ड रसेलका अुद्धरण ('दुनियाके जिन हिस्सोंमें . . .' वगैरा), जो श्री प्रसादके लेखमें आता है, अपूर्ण है और अिसलिअे अैसा अर्थ सुझाता है जो रसेलकी मंशा नहीं थी। अुस अुद्धरणको जारी रखा जाय और पूर्ण किया जाय तो वह अिस प्रकार है . . . 'अिन खतरोंको समझकर गांधीने सारे देशमें हाथ-करघेकी बुनाअीको पुनर्जीवन देकर प्रगतिको पीछे ठेलनेका प्रयत्न किया। वे आधे सही थे, परंतु विज्ञान जो लाभ हमें देता है, अुनसे अिनकार करना मूर्खता है; अिसके बजाय अुत्सुकतासे हमें अुनका लाभ अुठाना चाहिये और अपनी भौतिक संपत्ति बढ़ानेमें तथा शुद्ध हवा, छोटे समाजमें अपना दर्जा बनाये रखने, और जिम्मेदारी व अच्छी तरह किये हुअे कामका गौरव अनुभव करनेकी सीधी-सादी सुविधाओं और अनुकूलताओंको सुरक्षित रखनेमें अुनका अुपयोग करना चाहिये। ये सुविधायें और अनुकूलतायें किसी बड़े औद्योगिक शहरमें मजदूरको मुश्किलसे ही मिल सकती हैं।" (अथॉरिटी अेण्ड अिंडिविज्युअल, पृ० ८६)

लेखकका यह कहना ठीक है कि अधूरा अुद्धरण रसेलके विचारका केवल अेक ही पहलू देता है। लेकिन हम आसानीसे देख सकते हैं कि अपनी दलीलके सन्दर्भमें अुस लेखके लेखक रसेलके साथ कोअी अन्याय किये बिना अुसके अुद्धरणका वह भाग छोड़ सकते थे जो अुन्होंने छोड़ दिया है। यह कहना पूरी तरह सही नहीं होगा कि दिया हुआ अुद्धरण 'वह अर्थ सुझाता है जो रसेलकी मंशा नहीं थी'। रसेल अिस बातको जरूर समझता है कि लोगोंके नीचे जीवन-मानकी परम्परागत जीवन-पद्धतिके बनिस्बत 'अुद्योग-वादकी बुराअियां' ज्यादा बड़ी हैं। और अपने अिस कथनके साथ वह अेक नया विचार जोड़ता है जिसकी तरफ पत्रलेखकने मेरा ध्यान खींचा है। मेरे विचारसे अगर रसेलका अुद्धरण पूरा दिया जाता तो वह अनावश्यक रूपमें चर्चाके विषयका अेक गौण पहलू पेश करता, जिसका प्रस्तुत विषयसे सीधा संबंध नहीं था।

* 'हरिजनसेवक' में यह लेख ता० २७-८-'५५ के अंकमें छपा है।

यह साफ है कि रसेल अिस बातको कबूल करता है कि अुद्योगवादकी बुराअियां हमारे गांवोंके 'परंपरागत जीवन' की बुराअियोंसे ज्यादा बड़ी हैं। अिस संबंधमें अुसकी अतिरिक्त दलील यह है कि 'विज्ञान जो लाभ हमें देता है अुनसे अिनकार करना मूर्खता है।' और अिसे रसेल 'प्रगतिको पीछे ठेलना' कहता है।

भारतमें भी कुछ लोग गांधीजीके ग्रामोद्योग संबंधी आर्थिक विचारोंका वर्णन करते समय अक्सर अिस शब्दप्रयोगको काममें लेते हैं। लेकिन वह शब्दप्रयोग अितना आकर्षक या नारेके स्वरूपका है कि अुसकी विवेकपूर्ण जांच नहीं की जा सकती। यह ध्यान देनेकी बात है कि रसेल यह दलील नहीं करता कि 'विज्ञान जो लाभ हमें देता है' वे केवल केन्द्रित अुद्योगके जरिये ही अुठाये जा सकते हैं, जिसे मुझे डर है आज भारतमें कअी लोग वैज्ञानिक सत्यके रूपमें मान लेते हैं। रसेल निश्चित रूपसे कहता है कि विज्ञान जो लाभ हमें देता है अुन्हें प्राप्त करना चाहिये और अुनका पूरा लाभ अुठाना चाहिये। लेकिन याद रखनेकी बात तो यह है कि रसेल सुझाता है कि अैसा छोटे समाजकी विकेन्द्रित जीवन-पद्धतिके जरिये भी किया जा सकता है। भारतमें हमारे अधिकांश लोग अैसे छोटे छोटे ग्रामसमाजोंमें रहते हैं। और अब यह सबको स्पष्ट हो जाना चाहिये कि जो लोग छोटे पैमानेके ग्रामोद्योगोंके जरिये विकेन्द्रीकरणके हिमायती हैं, वे विज्ञान जो लाभ दे सकता है अुन्हें जरूर अुठाना चाहते हैं। बात अितनी ही है कि वे अिस बातको नहीं मानते कि केन्द्रित अुद्योगवादका मार्ग ही अेकमात्र वैज्ञानिक मार्ग है; अिस मार्गकी वे हिमायत नहीं करते।

अिसलिअे 'प्रगतिको पीछे ठेलने' का जिक्र ठीक नहीं है और मेरे खयालमें अुस अत्यन्त सामान्य पूर्वग्रहका कारण है, जो पूंजी-वाद और केन्द्रित अुद्योगवादके जरिये प्राप्त हुअी पश्चिमी सफल-ताओंसे मोहित लोगोंमें पाया जाता है। अिसलिअे वह वास्तवमें वैज्ञानिक नहीं है। अिस संबंधमें यहां प्रसिद्ध अमेरिकन समाजशास्त्री लुअिस ममफोर्डकी अभी हालमें प्रकाशित हुअी पुस्तक 'अिन दि नेम ऑफ सेनिटी' से कुछ अुद्धरण देना दिलचस्प होगा। वह अुस तर्ककी खुली भूलको स्पष्ट कर देता है, जो 'प्रगतिको पीछे ठेलने' की सादी दलीलके पीछे छिपी रहती है। वह कहता है (पृ० ११२ . . .):

"सत्य यह है कि मनुष्यके पुराने शत्रु अज्ञान, गरीबी और कमजोरी पश्चिमी सभ्यताके खतरे नहीं हैं; बात अिससे बिलकुल अुलटी है। अीश्वरकी तरह व्यापक ज्ञान, वह धन-दौलत जिसका मानव-जातिने पहले कभी अुपभोग नहीं किया था, अत्यन्त प्रचण्ड शक्ति — अिन सब ध्येयोंने, जिनकी प्राप्तिके लिअे पश्चिमके मनुष्यने अितनी अेकाग्रतासे प्रयत्न किया है, अिस सभ्यताको टूटनेके किनारे पर ला खड़ा कर दिया है।

"साफ है कि यह रास्ता केवल भूलभुलैया ही सिद्ध नहीं हुआ है; वह मृत्युका फन्दा भी साबित हो सकता है। अगर हम अुस रास्ते पर और आगे बढ़े तो घातक रूपमें पकड़े जा सकते हैं। अिसलिअे हमारी पीढ़ीका काम अपने कदम पीछे लौटाना, अपने-आपको सही दिशामें मोड़ना, और जीवनके दूसरे मार्ग खोजना है। हमें मनुष्यकी आवश्यकताओंकी फिरसे जांच करना चाहिये और जिन ध्येयोंकी प्राप्तिमें गलतीसे हम अभी तक लगे रहे हैं अुनसे ज्यादा मानवीय ध्येयोंकी स्थापना करनी चाहिये। हमें जीवनका अैसा मार्ग चुनना चाहिये, जो प्राचीन समयमें मोक्षका मार्ग कहा जाता था, और जो आज हमारे जीवित रहनेका भी मार्ग है। हमें आज भी अधिक ज्ञानकी जरूरत है, लेकिन वह आधुनिक विशेषज्ञोंके टुकड़ोंमें बंटे हुअे असंबद्ध ज्ञानसे भिन्न होगा; हमें अधिक धन-दौलतकी

www.vinoba.in

जरूरत है, लेकिन अैसी धन-दौलत जिसका माप नफे और प्रतिष्ठाके बजाय जीवनके रूपमें निकाला जाता है; हमें अधिक शक्तिकी भी जरूरत है — नियंत्रण रखनेवाली, रोकनेवाली, मार्गदर्शन करनेवाली, संयम रखनेवाली और आत्मत्यागकी भावना पैदा करनेवाली मानव-शक्तिकी, जो हमारी विस्फोट और संहार करनेवाली समृद्ध भौतिक शक्तिके सीधे अनुपातमें हो।

"ये शब्द अैसी पीढ़ीके लोगोंको अमंगलकारी मालूम होंगे, जिसे सारे परिवर्तनोंको प्रगतिशील मानना, सारे यांत्रिक आविष्कारोंको वांछनीय समझना और सारे प्रतिबंधों और नियंत्रणोंको निराशाजनक मानना सिखाया गया है। ये शब्द अुन लोगोंको बुरे मालूम होंगे, जो मार्क्सवादी न होते हुअे भी अितिहास और संस्कृतिको अेक प्रकारकी संयोजनकी प्रक्रिया मानते हैं, जिसमें मनुष्य स्वयं कोअी निर्णायक भाग नहीं ले सकता, सिवाय अिसके कि मनुष्यके नियंत्रणसे परे शक्तियोंकी अनिवार्य गतिको बढ़ानेमें कारणभूत बने। अैसे लोग अुस अद्भुत विश्वासका सार अिन शब्दोंमें दिया करते हैं: आप प्रगतिकी घड़ीके कांटोंको पीछे नहीं घुमा सकते। लेकिन प्रत्यक्ष दिखाये जा सकनेवाले सत्यके नाते, यह न तो व्यावहारिक दृष्टिसे और न लाक्षणिक दृष्टिसे सही है। हमारी पीढ़ीने बार बार बुरे और दुष्ट अुद्देश्योंके खातिर घड़ीके कांटोंको पीछे घूमते देखा है; वे अुद्देश्य जिन्होंने निर्दोष आदमियोंकी गुलामी और हत्याको तानाशाही सरकारोंके राज्यमें मामूली बात बना दिया है। और अिस भयंकर नकारात्मक अुदाहरणसे हमें अिसका विश्वास हो जाना चाहिये कि अच्छे अुद्देश्योंके लिअे भी घड़ीका कांटा पीछे घुमाया जा सकता है, बशर्ते विवेकशील भले आदमी, जो लोकतांत्रिक और विवेकपूर्ण प्रक्रियाओंमें विश्वास रखते हैं, अुसी तरह अपने मनको भलीभांति जानें जिस तरह पाशविक वृत्तिवाले और बुद्धिका दिवाला पीटनेवाले जानते हैं।

"अिसलिअे स्वयंचालनकी मौजूदा प्रक्रियाओंको आगे बढ़ानेके बजाय, प्रेमका अिनकार करनेवाली और जीवनको रूंधने व अुसका गला घोटनेवाली जीवन-पद्धतिके सामने झुकनेके बजाय हमारी आशा अिस बातमें है कि हम यांत्रिक जगत्के ठीक केन्द्रमें मानव व्यक्तित्वकी स्थापना करें, जो अुस जगत्की पैदा की हुअी यांत्रिक क्रियाओंके जंगलमें आज खो गया है, भटक गया है और भूखा पड़ा है। हमारे पूर्वजोंने केवल शक्तिको खोजा, जब कि हमें नियंत्रण और संयमकी खोज करनी चाहिये; हमारे पूर्वजोंको कारणों और साधनोंमें ही रस था, जब कि हमें अुद्देश्यों और ध्येयोंमें भी अुतना ही रस लेना चाहिये। अिसीलिअे वर्तमान पीढ़ीके लिअे कला, धर्म और नीतिशास्त्रका वह महत्त्व है, जो आजसे दस वर्ष पहले भी अुन्हें प्राप्त नहीं था। और यही कारण है कि स्वयं कलाओंका, मुख्यत: अिसलिअे कि मानव व्यक्तित्वकी केन्द्रीय अभिव्यक्तियोंमें अुनका स्थान है, हमारी वर्तमान संकटपूर्ण स्थितिको समझनेमें और अुससे बाहर निकलनेका रास्ता खोजनेमें अनोखा महत्त्व है।"

आगे चलकर ममफोर्ड अेक दूसरे दृष्टिकोणसे अिस मुद्देकी चर्चा करता है और कहता है (पृ० ११६ . . .):

"पिछली तीन शताब्दियोंसे पश्चिमका मनुष्य अपनी बाहरी और भीतरी दुनियाको मशीनकी सहायतासे पुन: गढ़ता आ रहा है और दिनोंदिन अुसे मशीनका प्रतिरूप बनानेका प्रयत्न करता रहा है। कुदरतको जीतनेकी धुनमें वह दुर्भाग्यसे मानवता, विश्व और दिव्यत्वको भूल गया है। बेशक, अिस परिवर्तनका अंतिम कारण १७ वीं शताब्दीमें होनेवाली वैज्ञानिक क्रान्ति थी। यह क्रान्ति अीसाअी चर्चकी अपने सीमित मानव क्षेत्रको अुस सर्वज्ञता और सर्वशक्तिमत्ताके साथ, जिसका अुसने अपने अीश्वरके लिअे प्रतिपादन किया था, अेकरूप कर देनेकी वृत्तिके खिलाफ अुत्पन्न हुअी प्रतिक्रिया थी। विज्ञानने अीसाअी धर्मके अिन दावोंकी अुपेक्षा की कि मनुष्यके लिअे महत्त्वपूर्ण सारे ज्ञानका अुसे सीधा अिलहाम हुआ है और वह बाह्य प्रकृतिके खंडश: परीक्षणमें लगा रहा। सच्चा ज्ञान प्राप्त करनेके अपने प्रयत्नमें विज्ञानने परिमाणोंको गुणोंसे, वस्तुनिष्ठ तथ्योंको आत्मनिष्ठ तथ्योंसे, परिमेयको अपरिमेयसे और सादे अंशको मिश्र पूर्णसे अलग कर दिया। अपने अिस कार्यसे विज्ञानने कलाकारकी दुनियाको अवास्तविक मानकर दूर हटा दिया — वह दुनिया जो आवेशों और अिच्छाओंसे जन्म लेती है; जो गुणोंकी और आत्मगत भावोंकी दुनिया है; जिसके पूर्ण स्वरूप खंडोंमें बांटते ही अर्थहीन हो जाते हैं।

"अिस तरह ज्ञानको जानबूझकर मनुष्यके व्यक्तित्व और मानवतासे दूर रखनेके कारण भौतिक विज्ञानशास्त्रीको कुदरतकी शक्तिकी फिरसे जांच करनेका अेक बड़ा साधन मिल गया। लेकिन साथ ही अिसके कारण मानव जीवनका अर्धभाग, आत्मनिष्ठ और आन्तरिक अर्धभाग, अगर खतम नहीं तो महत्त्वहीन जरूर बन गया है। स्वाभाविक ही जिन लोगोंने यह परिवर्तन किया, अुन्होंने पूरी तरह अिसको नहीं समझा कि वे क्या कर रहे हैं। डेस्कार्टीज़की तरह अुन्होंने आत्माको चर्चके हाथमें सौंपकर अिस पाखंडको अपनी आंखोंसे भी छिपाया, जब कि अैसी हर चीजको जिसे वे बौद्धिक महत्त्वकी मानते थे विज्ञानके लिअे सुरक्षित रख लिया। परंतु पिछली तीन शताब्दियोंके दौरानमें, जो भौतिक विज्ञानकी दिनोंदिन बढ़नेवाली बौद्धिक और व्यावहारिक सिद्धियोंके लिअे विख्यात हैं, गैलीलियोके विज्ञानकी प्रक्रियाओं संबंधी मूल सूत्रके अंतिम परिणाम स्पष्ट दिखाअी देने लगे: विज्ञानने न केवल हजारों अप्रस्तुत कल्पनाओं और मनपसन्द क्रियाकलापोंको छोड़ दिया, जिन्होंने मनुष्यको भौतिक जगत्के स्वरूपको समझने नहीं दिया था, बल्कि अुसने खुद मनुष्यको भी हानि पहुंचाअी और जीवनके हर विभागमें से अुद्देश्य, मूल्य और गुणकी आवश्यक कल्पनाओंको खतम कर दिया।

"मानवका स्वायत्त और स्वतंत्र आन्तरिक जगत्; भावनायें, आवेग और प्रेरणायें जिन्हें वह कलाके रूपमें सिद्ध करता है, — अिन सबका विज्ञानसे कोअी वास्ता नहीं था; अिन सबका अुसके ध्येयोंके साथ कोअी संबंध नहीं था। वैज्ञानिक जिस आदर्श दुनियाको जन्म दे रहा था, अुसमें मशीनें दिनोंदिन अधिक मात्रामें मनुष्योंका स्थान लेने लगीं, और स्वयं मनुष्य अुसी हद तक बरदाश्त किये जाते थे जिस हद तक वे मशीनके गुण अपनाते थे — आवेगों और भावनाओंसे मुक्त रहते थे, मूल्योंकी अुपेक्षा करते थे, और अपनेको सौंपे हुअे काम या प्रक्रियाके तात्कालिक परिणामोंके सिवा और सब परिणामोंकी ओरसे तटस्थ रहते थे। चूंकि मनुष्य स्वयं प्रकृतिकी व्यवस्थाका अेक अंग है, अुसने विचारकी अिस नअी पद्धतिसे अपनी प्रकृतिके बारेमें और परिस्थितियोंके बारेमें बहुत कुछ सीखा, परंतु साथ ही वह अपने मूल स्वभाव और वृत्तियोंको भूल गया, जिन्हें धर्म और कलाने हमेशा बड़ी मात्रामें स्वीकार किया है।"

१६-९-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

www.vinoba.in

तामिलनाडमें अस्पृश्यता

तामिलनाडके गांवोंमें अस्पृश्यता आज भी चारों ओर फैली दिखायी देती है। दूसरे प्रान्तोंमें भी यही बात होगी। चाय और कॉफी तथा नाअियोंकी दुकानोंमें अस्पृश्यताका व्यवहार होता है। कुआ, तालाब, 'चावड़ी', मंदिर आदिके संबंधमें वह ज्यादा दिखायी देती है। लेकिन स्कूलों, रेल, मोटर आदि सरकारी वाहनों, सिनेमा-घरों, देहाती बाजारों, सार्वजनिक आयोजनों आदिसे अुसका पूरा लोप हो गया है।

कअी गांवोंमें हरिजनोंको चायकी दुकानोंमें प्रवेश नहीं करने दिया जाता और यदि करने दिया जाय, तो अुन्हें चाय नारियलकी नरेटियों, केलेके पत्तोंके दोनों, टीनके अथवा अलग बर्तनोंमें दी जाती है। कभी कभी अुन्हें अलग कमरेमें बिठाया जाता है और चाय तथा भोजन अेक खिड़कीके जरिये दिया जाता है। अेक वार जब मैं कुछ हरिजनोंको अेक ब्राह्मणोंके होटलमें ले गया तो मुझे और अुन्हें बहुत बेरहमीसे पीटा गया। हरिजन युवकोंके होटलोंमें घुसकर सामान्य बर्तनोंमें ही कॉफी देनेकी मांग करने पर अुन्हें जूतेसे पीटने और बाहर निकाल देनेकी कोअी पांच घटनाअें हुअी होंगी। पुलिसने अुनमें से केवल तीनके ही बारेमें कार्रवाअी की और वह भी तब जब हमने मामलेको आगे बढ़ानेकी कोशिश की।

गांवोंमें नाअियोंकी दुकानोंमें हरिजन लोग जा सकें और अुनकी सेवा ले सकें, यह काम सचमुच बड़ा कठिन है। हरिजन लोग अुनमें जानेकी हिम्मत नहीं करते, क्योंकि वैसा करने पर सवर्ण हिन्दू अुन्हें तरह तरहसे हैरान करते हैं।

अिसी तरह वे अपने कपड़े भी सवर्ण हिन्दू धोबियों और अुनकी दुकानोंमें देनेकी हिम्मत नहीं करते। अिन दुकानोंके हरिजनोंके कपड़े लेनेसे अिनकार करनेकी भी कअी घटनाअें हुअी हैं।

म्युनिसिपल हदके अन्दरकी बस्तियों तकमें कुछ चाय-घर, तथा नाअियों और धोबियोंकी दुकानें हरिजनोंके लिअे बंद होती हैं।

जिन कुओं और तालाबोंका सवर्ण हिन्दू अुपयोग करते हैं, वे सामान्यतः हरिजनोंके लिअे बंद होते हैं। हम जब हरिजनोंको कुओं और तालाबोंका अुपयोग करने और अुनसे पानी लेनेको कहते और प्रोत्साहित करते हैं, तो अुसका परिणाम यही होता है कि हरिजन बेचारे मुश्किलमें पड़ जाते हैं।

गांवके विश्राम-स्थान हरिजनोंके लिअे खुले नहीं होते। अिस दिशामें हमारी कोशिश व्यर्थ सिद्ध हुअी है। अिसी तरह गांवोंके छोटे-छोटे मन्दिर अभी तक हरिजनोंके लिअे बन्द हैं। बड़े शहरोंमें कुछ धर्मशालाअें भी हरिजनोंके लिअे खुली नहीं हैं।

स्कूलोंमें हरिजन विद्यार्थियोंके साथ होनेवाला भेदभाव अब वैसा तो नहीं रहा जैसा पहले था। फिर भी पीनेका पानी और दोपहरका नाश्ता देनेके मामलेमें अुनके साथ भेदभाव करनेके कुछ अुदाहरण मिले हैं। जिला बोर्डों द्वारा चलाअी जानेवाली कुछ प्राथमिक पाठशालाओंमें दूसरे विद्यार्थियोंको तो गिलासोंमें पानी पीने दिया जाता है, लेकिन हरिजनोंको यह सुविधा नहीं है। गैर-हरिजन विद्यार्थी पानी डालते हैं और वे अुसे अपने हाथोंमें झेलकर पीते हैं। मदुराअी जिला बोर्डके अध्यक्षको अैसी दो घटनाओंकी शिकायत की गअी थी।

हमारे गरीब हरिजनोंको गांवोंमें, अपने दैनिक जीवनमें, अैसी अनेक कठिनाअियां और अपमान सहने पड़ते हैं।

स्वामी आनन्दतीर्थ

[स्वराज्यमें हमारे हरिजन भाअियोंको तामिलनाडमें कैसी-कैसी कठिनाअियां सहनी पड़ती हैं, अिस बातकी अेक लम्बी रिपोर्टसे अूपरका हिस्सा संगृहीत किया गया है। सारे देशमें देहातोंमें लगभग अैसी ही हालत होगी। यद्यपि कानूनने अस्पृश्यताको मिटा दिया है, लेकिन रूढ़ि अुसे अभी भी जारी किये हुअे है। और चूंकि रूढ़िका राज्य गांवोंमें ही ज्यादा प्रबल है अिसलिअे हरिजनोंको वहीं अुससे ज्यादा तकलीफ सहना पड़ती है। हमें याद रखना चाहिये कि तथाकथित सवर्णोंको अिस पापका प्रायश्चित्त करना है और अुसका तरीका यह है कि हरिजनोंको जहां अिस अंधी और अधार्मिक प्रथाके कारण तकलीफ हो रही हो वहीं वे साहसके साथ अुनके पक्षमें खड़े हों और अुनकी सक्रिय मदद करें।

२१-९-'५५ --म० प्र०]

(अंग्रेजीसे)

मनुष्य मनुष्यकी हत्या नहीं कर सकता

[ता० १८-८-'५५ को रेवलकणा (कोरापुर, अुत्कल) पड़ाव पर दिया गया प्रार्थना-प्रवचन।]

पन्द्रह अगस्तको, हमारे स्वातंत्र्य-दिनके अवसर पर, हमारे भाअी-बहनोंने गोआमें सत्याग्रहीके तौर पर प्रवेश करनेकी सब तैयारी की और वे बिना कोअी शस्त्र लिये अन्दर जा रहे थे। परन्तु प्रवेशके समय अुन लोगों पर बहुत बुरी तरहसे मार पड़ी है और अुनमें से पच्चीस-तीस मनुष्योंको कत्ल भी किया गया है। अंग्रेजोंकी अितनी बड़ी सल्तनत हिन्दुस्तानमें थी, पर वह भी यहां नहीं रह सकी। अुस घटनाको अब आठ साल होते हैं। लेकिन गोआवाले पोर्तुगीज लोग अभी भी अिसे नहीं समझ पा रहे हैं। बीचमें फ्रेंच लोगोंने अपना आग्रह छोड़ दिया और पांडिचेरीको मुक्त कर दिया। अंग्रेजोंने भारत छोड़ा, तो अुसमें अुन्होंने भी कुछ नहीं खोया; बल्कि अुससे अुनकी अिज्जत ही बढ़ी और हिन्दुस्तानके साथ अुनका प्रेम बना रहा। आज अुनका व्यापार भी जैसा चलना चाहिये, वैसा यहां चल रहा है। पोर्तुगीज लोगोंको भी यही करना पड़ेगा। परन्तु मनुष्य मोह और ममताको अेकदम नहीं छोड़ता है।

सत्य छिपाया नहीं जा सकता

लेकिन अिस तरहसे निःशस्त्र लोगोंकी निर्मम हत्या करनेवालों-की मंशा अिस जमानेमें कभी सिद्ध नहीं होगी। आज सारी दुनिया शांतिकी आकांक्षा कर रही है। बड़े-बड़े देशोंके बड़े-बड़े नेता शांतिके लिअे अेक-दूसरेसे मिल रहे हैं और अेक-दूसरेके साथ हाथसे हाथ मिला रहे हैं। अुस हालतमें अिस तरहसे अत्याचार करके पोर्तुगाल हिन्दुस्तानके अेक हिस्से पर अपनी सत्ता बनाये रख सकेगा, यह कदापि सम्भव नहीं है। परन्तु जिनका दिमाग नयी बातें सीखनेके लिअे खुला नहीं है, अैसे लोगोंके हाथमें जब देशकी बागडोर होती है, तब देशकी जनताका कुछ नहीं चलता है। हम समझते हैं कि पुर्तगालकी जनताकी अिस हत्याकांडके प्रति कुछ भी सहानुभूति नहीं होगी। यह बात ठीक है कि अुनको ठीक जानकारी नहीं दी जाती होगी और वहांके अखबारोंमें सारी खबरें दूसरे ढंगसे प्रकाशित की जाती होंगी। लेकिन अिस तरह सत्य कभी छिपा नहीं रह सकता है।

मानव-हृदयकी दृष्टि

गोआमें यह जो बड़ी दुर्घटना हुअी है, अुससे हम सब लोगोंके दिलोंको बहुत सदमा पहुंचा है। गोआ पर हिन्दुस्तानका अधिकार है, अिस बातको हिन्दुस्तानकी जनता भी मानती है और गोआकी जनता भी मानती है। वस्तुतः हिन्दुस्तान और गोआ, दोनों अेक ही हैं। लेकिन यहां पर मैं अभी अिस बारेमें नहीं कह रहा हूं। यह तो स्पष्ट है कि गोआ सब तरहसे हिन्दुस्तानका अेक अंश है। अिसलिअे भारतवासियोंके हृदयको अिस दुर्घटनासे सदमा पहुंचना स्वाभाविक ही है। परन्तु मैं अिसकी ओर बिलकुल अेक मानव-हृदयकी दृष्टिसे देखता हूं। अैसी घटना जहां भी होती है, वहां पर सारी मानवता विदीर्ण हो जाती है।

अुसी दिनकी और अेक खबर अखबारमें आयी है। बिहारमें, पटनामें, अुसके अेक-दो रोज पहले गोली चली थी, जिसमें कुछ

www.vinoba.in

विद्यार्थी मारे गये थे। अिसके विरोधमें सारे विहारमें हलचल हुआी और आज हमें खबर मिलती है कि नवादामें भी गोली चली, जिसमें भी कुछ विद्यार्थी मारे गये।

परम अधिकार

मानव पर गोली चलानेका यह जो अधिकार मानवने मान लिया है, वह बिलकुल ही अमानवीय वस्तु है। मानवका पहला अधिकार यह है कि अुसकी मानवता कायम रहे। और सब अधिकार बादके हैं। हम समझते हैं कि हिन्दुस्तानमें गोली चली है, तो हमारे स्वराज्यके लिअे वह कलंक हो जाता है, सारी मानवताके लिअे भी वह कलंक हो जाता है। गोआमें गोली चली, वह स्वराज्य पर आक्रमण है। हर मनुष्यके हृदयमें स्वराज्य-भावना होती है। अुसी पर आक्रमण हुआ है, परन्तु अुसके साथ-साथ मानवता पर भी आक्रमण है। मनुष्यके हृदयमें यह जो सत्ता चलानेकी बात रहती है और अुसको वह कर्तव्य भी मान लेता है, अुसकी बदौलत वह मान लेता है कि अुसको हत्या करनेका भी अधिकार है। मानवको पहले यह तय करना होगा कि हमें हत्या करनेका अधिकार नहीं है। हमारा तो प्रेम करनेका ही अधिकार है। जब हम अपने अुस परम अधिकारको खोकर दूसरी-तीसरी बातोंके लिअे मानवकी हत्या करनेके लिअे प्रवृत्त हो जाते हैं, तब हम अपनी ही हत्या कर लेते हैं।

सत्ता नहीं, सेवा

अिस विषय पर आज मैं विस्तारसे नहीं कहना चाहता हूं, परन्तु अिससे मेरे हृदयको बहुत ही दुःख हुआ है। अिसमें से यह बोध लेना है कि हमें सत्ताकी बात छोड़नी होगी और यह समझना होगा कि परमेश्वरने हमें अेक ही अधिकार दिया है और वह यह कि हम सबकी सेवा करें और सबकी रजामंदीसे अपना जीवन चलायें। मैं मानता हूं कि अिस बातको मानव अवश्य ग्रहण करनेवाला है। मैं यह भी मानता हूं कि अिसका स्वीकार बहुत दूरके कालमें नहीं, नजदीकके कालमें ही होनेवाला है। लोगोंको बड़ी फिक्र पड़ी है कि अेटम बम, हाअीड्रोजन बम अित्यादि हथियारोंसे कैसे बचें। लेकिन मैंने कअी मर्तबा कहा है कि मनुष्यका अगर कोअी वैरी है तो वह है लाठी, बंदूक, तलवार जैसे छोटे-छोटे हथियार। ये तो बाप हैं और अेटम बम आदि अुनके बेटे हैं। अुन्होंने ही अेटम बम आदिको पैदा किया है। यह बात ठीक है कि बेटे बापसे सवाअी हो गये हैं, शतगुण शक्तिवाले हो गये हैं। लेकिन अुनकी पैदाअिश अिन्हींसे हुअी है। लोगोंको जागतिक युद्ध टालनेकी फिक्र होती है, लेकिन मेरे मनमें अैसी फिक्र कभी पैदा ही नहीं होती है। मैं मानता हूं कि जो जागतिक युद्ध होते हैं, वे मनुष्य नहीं करता है, वे तो मनुष्यसे कराये जाते हैं। लेकिन जो छोटी-छोटी लड़ाअियां और छोटे-छोटे अत्याचार चलते हैं, अुनको मनुष्य खुद करता है। अिसलिअे अगर हम अुनको रोक सकेंगे, तो वे सारे अेटम बम आदि भी क्षीण हो जायेंगे। अिसीलिअे मुझे जागतिक युद्धकी कोअी चिंता नहीं है।

हत्याओंकी जड़

भारतको यह निश्चय कर लेना चाहिये कि हमारे जो कअी मसले और कअी दुःख हैं, अुनके निवारणके लिअे हम कभी भी हत्याका अधिकार नहीं मानेंगे। जहां भारतीय मनुष्य यह निर्णय कर लेगा, वहां भारतमें और सारी दुनियामें समाज बदल जायेगा। लेकिन जब समाजकी आजकी विषम परिस्थितिको बदलनेका निर्णय भारत करेगा, तभी वह अिस निर्णय पर आयेगा। जब तक मनुष्यका मन अपने छोटे-छोटे सत्वाधिकार छोड़नेको तैयार नहीं होता है, तब तक वह हत्या करनेका अधिकार भी नहीं छोड़ेगा। अिन छोटे-छोटे अधिकारोंको आज कानूनमें भी स्थान दिया जाता है और फिर अुस कानूनकी रक्षाके लिअे हर तरहकी कृत्रिम योजना करनी पड़ती है। मनुष्य व्यक्तिगत अधिकार, जातिगत अधिकार, वांशिक अधिकार रखना चाहता है। वह समझता है कि ये हमारे बुनियादी अधिकार हैं। अिस तरह हम जिन अधिकारोंको मानते हैं, अुनकी रक्षाके वास्ते तलवारका अुपयोग करनेका और हत्या करनेका हमें अधिकार है, अैसा हम मानते हैं। अिस तरह वे लोग हिंसाको धर्मका रूप देते हैं। हिंसा करना अेक बात है और हिंसाको धर्म या कर्तव्य समझकर हिंसा करना दूसरी बात है। हमें यह सारी वृत्ति बदलनी होगी और मानवताके लिअे पूर्ण मौका देना होगा।

अधिकारवादका भस्मासुर

अिसमें किसीको कोअी शक नहीं होना चाहिये कि आज अगर गोआके लोगोंकी राय ली जाय, तो अुनकी राय पोर्तुगीज लोगोंकी सत्ता हटानेके पक्षमें ही होगी। लेकिन पोर्तुगीज लोग अपना अधिकार मानकर बैठे हैं। अिसी तरहसे अंग्रेज लोग भारत पर अपना अधिकार मानकर बैठे थे। अिसी तरहसे हमारे राजा-महाराजा अपना अधिकार मानकर बैठे थे और अिसी तरहसे आज यहांके कारखानोंके और बड़ी जमीनके मालिक अपना अधिकार मानकर बैठे हैं। यह अधिकारकी बात अितनी फैल गअी है कि परिवारमें भी लोग अधिकार चलानेकी बात छोड़ते नहीं। हम हमेशा परिवारकी अुपमा देते हुअे कहते हैं कि परिवारमें प्रेमका कानून चलता है। लेकिन आज परिवारमें भी कानूनने प्रवेश किया है, वहां पर भी सत्ताकी बात मानी गयी है। बापकी अिस्टेट पर बेटोंका अधिकार है, लेकिन लड़कियोंका अधिकार है या नहीं, अिस पर चर्चा चलती है। समझनेकी बात है कि बेटेके समान बेटीको भी माता-पिताके गुण और शरीरका रूप प्राप्त होता है। फिर भी बेटीका संपत्ति पर अधिकार है या नहीं, अिस बारेमें चर्चा चलती है! जहां पर प्रेमके सिवाय दूसरी बात ही नहीं चलनी चाहिये, वहां पर भी सत्ताकी और अधिकारकी बात पैठ गअी है और अुसकी रक्षाके लिअे कानूनका आधार लिया जाता है। अेक जमाना था, जब पत्नी पर पतिका अधिकार है, यह बात भी मानी गयी थी और महाभारतमें तो युधिष्ठिरने द्रौपदीको भी दाव पर चढ़ा दिया था! अिस तरहसे अधिकारकी बात समाजमें अितनी चली कि आज अुसीकी पीड़ा हो रही है।

पहला व अन्तिम अधिकार

किसका क्या अधिकार है, अिसकी चर्चा हम बादमें करेंगे, परन्तु सर्वप्रथम अेक बात माननी चाहिये कि किसीको भी मानवकी हत्या करनेका अधिकार कदापि नहीं हो सकता। मुझे अुम्मीद है कि हिन्दुस्तानके लोग अिस बातको जल्दी समझेंगे। आज मानवके अधिकारोंमें किन अधिकारोंकी गिनती करनी चाहिये, अिस पर चर्चा चलती है। परन्तु भारतके लोग समझते हैं कि मानवका जन्म सेवाके लिअे है। मानवको सेवा करनेका ही परम अधिकार है। सत्ता चलानेकी बात तो जंगलका शेर भी करता है। कभी-कभी वह मनुष्यको खानेके लिअे ले जाता है, तब वह सोचता है कि मेरा अिस पर अधिकार है। मुझे खानेकी चीज मिल गअी है। अिस कोरापुट जिलेमें तो हम अैसी घटनाअें हमेशा सुनते हैं। अुसको भूख लगी हुअी होती है, अिसलिअे अुसे अपना अधिकार सिद्ध करनेके लिअे और किसी प्रमाणकी जरूरत नहीं होती है। अुसी तरह हम लोग भी जानवरोंकी हत्या करना अपना अधिकार मानते हैं। कलकत्तेमें हर रोज गायें कटती हैं,

www.vinoba.in

तो मनुष्य मानता है कि गायोंको काटनेका हमारा अधिकार है! शेर अगर अैसी बात करता है, तो वह अज्ञानी जीव है। अुसके पास समझनेकी शक्ति नहीं है। लेकिन मानवको भगवानने अुतनी अकल दी है। आज जब कि विज्ञान अितना फैला है और ऋषियोंकी कृपासे भारतमें आत्मज्ञान भी फैला है, तो मानवको यह समझना चाहिये कि अुसका परम अधिकार, प्रथम अधिकार और अंतिम अधिकार है प्रेम और सेवा करना।

('भूदान-यज्ञ' से) विनोबा

भारत और अणुयुग

'मनस' नामक अंग्रेजी पत्र अपने ११ मअी, १९५५ के अंकमें 'वीर और शिकार' शीर्षक लेखमें आअिन्स्टीनके बारेमें लिखते हुअे कहता है कि "वह अेक अैसे पुरुष थे जो अपने युगके वीर और शिकार दोनों थे।" आअिन्स्टीन सापेक्षतावादके सिद्धान्तके वीर थे, जब कि अपने अुस ज्ञानके वह शिकार थे जिसने हमारी अिस मूढ़ और पागल धरती पर अणु-शक्तिको अुन्मुक्त कर दिया। जैसा कि 'मनस' कहता है:

"आज तकके भौतिक संहारके सबसे भयंकर साधनके विकासमें आअिन्स्टीनका हाथ होना अुनके जीवनकी अेक बड़ी करुण घटना थी। अमेरिकाके मेहमानके नाते — वे नाजी जर्मनीसे भागकर यहां आये थे — आअिन्स्टीनने अपने साथी वैज्ञानिकोंकी यह अपील मान ली कि वे अमेरिकन प्रेसिडेन्टके सामने अणुबमकी संभावनाओंकी बात रखें। प्रेसिडेन्ट रूजवेल्टको वह पत्र लिखनेके लिअे ही अुन्हें बहुत भारी कीमत चुकानी पड़ी होगी। हिरोशिमा और नागासाकी पर अणुबम गिरानेके बाद अुनके हृदयको कितना गहरा आघात लगा होगा, अिसकी हम कल्पना कर सकते हैं।"

बेशक, अिस घटनासे अुस महान वैज्ञानिकको अपार मानसिक पीड़ा हुअी होगी। अुन्होंने अपनी बौद्धिक क्षमताका अुपयोग अैसे भयंकर अुद्देश्यके लिअे करना रोककर अिसका प्रायश्चित्त किया था। और अब हम जानते हैं कि अुन्होंने वैज्ञानिक जगतको अेक पत्र लिखा था, जिसमें अुन्होंने वैज्ञानिकोंसे यह अपील की थी कि वे विश्वशांतिकी आवश्यकताओंकी दृष्टिसे अणुशक्तिके सारे प्रश्न पर पुनर्विचार करें। ब्रिटेनके गणितशास्त्री और दार्शनिक श्री बी० रसेलने आअिन्स्टीनके अवसानके कुछ माह बाद वह पत्र प्रकाशित किया। अिससे आगे बढ़कर अुन्होंने अणुशक्तिके दूसरे पहलूकी तरफ — संहारक पहलू नहीं जिसके वैज्ञानिक शिकार हो गये हैं, बल्कि शांतिपूर्ण पहलू जिस पर अपना सारा ध्यान केन्द्रित करनेकी जरूरत अुन्हें महसूस करनी चाहिये — अणुसे संबंधित वैज्ञानिकोंके सारे प्रयत्न मोड़नेकी दृष्टिसे अेक आन्तर-राष्ट्रीय परिषद् बुलाअी। यह खुशीकी बात है कि अिस परिषद्ने अेकमतसे नीचेका प्रस्ताव पास किया:

"चूंकि भविष्यके किसी भी युद्धमें अणुशस्त्रोंका अुपयोग होनेकी संभावना है और चूंकि अैसे शस्त्रोंसे मानवजाति पर अपार संकट और कष्ट आ पड़नेका तथा धन-संपत्तिकी अपार बरबादीका खतरा पैदा हो सकता है, यहां तक कि मानव-जातिका सर्वनाश भी हो सकता है, अिसलिअे हम दुनियाकी सरकारोंसे यह महसूस करने और सार्वजनिक रूपसे यह स्वीकार करनेका अनुरोध करते हैं कि विश्वयुद्धसे अुनके अुद्देश्य आगे नहीं बढ़ सकते।

"अिसलिअे हमारा यह अनुरोध है कि संपूर्ण मानव-जातिके खातिर ताजे वैज्ञानिक आविष्कारोंके गूढ़ अर्थोंकी पूरी और खुली जांच की जाय और सारे आन्तर-राष्ट्रीय झगड़ोंके निबटारेके लिअे शांतिपूर्ण साधनोंका विकास किया जाय।"

हम जानते हैं कि डॉ० भाभाकी अध्यक्षतामें अणुशक्तिसे संबंध रखनेवाले वैज्ञानिकोंकी अेक दूसरी आन्तर-राष्ट्रीय परिषद् भी अभी अभी हुअी है। अुसका विशिष्ट अुद्देश्य अिस बातकी चर्चा करना था कि अणु-सम्बंधी आविष्कारोंका अुपयोग अुद्योगोंके विकास और शांतिके लिअे किस तरह किया जा सकता है। हम आशा करें कि औद्योगिक अुद्देश्योंके लिअे अणुशक्तिका अुपयोग करनेका यह प्रयत्न भयंकर अणुशस्त्र अुत्पन्न करनेके पहले प्रयत्नके साथ मिलकर वैसे भयंकर आर्थिक और साम्राज्यवादी युगको जन्म नहीं देगा, जैसा हमने भाप और बिजलीका आविष्कार होने पर देखा। दुनियाको यह विश्वास दिलानेके लिअे कि अणुशक्तिके संबंधमें अैसा भयंकर नतीजा नहीं आयेगा, यह आवश्यक है कि अणुशस्त्र रखनेवाले राष्ट्र अुनका अुपयोग छोड़ देनेका और अुन्हें अमानुषिक और जंगली मानकर अुन पर प्रतिबंध लगानेका निश्चय करें।

आ रहे कहे जानेवाले अणुयुगके गौरवगानकी बड़ी बड़ी बातोंके प्रवाहमें बहकर हमें अुस सादी धरतीको नहीं भूल जाना चाहिये जिस पर हम खड़े हैं। भारत असंख्य गांवोंका देश है, जिनमें अपढ़ और सीधेसादे लोग बसते हैं। हमने वचन दिया है कि स्वराज्यमें अुनकी दशा सुधारनेके लिअे ही हम काम करेंगे। यह सबसे बड़ा और सबसे जरूरी शांतिपूर्ण अुद्देश्य है, जो भारतको पूरा करना है। यह अुतने ही सीधेसादे साधनोंसे पूरा किया जा सकता है, शर्त अितनी ही है कि हम अणुयुगके बारेमें कही जानेवाली बड़ी बड़ी बातोंमें अपनेको बह न जाने दें। ये साधन हैं अैसे औजारोंकी मददसे, जिनसे हम तत्काल काम ले सकते हैं, देशकी विशाल मानव-शक्तिको कामसे लगाना और अुसका पूरा अुपयोग करना। अगर हम अैसा करें तो पश्चिमी जगत्के भी अणु-संबंधी पागलपनको दूर करनेकी ताकत हममें आ जायगी। लेकिन अगर हमने स्वतंत्र भारतके लिअे यह पहला और सबसे महत्त्वपूर्ण काम नहीं किया, तो अणुयुगका हमारे लिअे कोअी अर्थ नहीं होगा — संभव है हमारे लिअे वह हानिकारक भी सिद्ध हो।

(अंग्रेजीसे) मगनभाई देसाई

हमारा नया प्रकाशन

अहिंसक समाजवादकी ओर

लेखक: गांधीजी; संपा० भारतन् कुमारप्पा

गांधीजी मानते थे कि सच्चे समाजवादका लक्ष्य प्रेम और शान्ति है, अिसलिअे वह अहिंसक साधनोंसे ही प्राप्त हो सकता है। अिस पुस्तकमें अहिंसक समाजवादकी स्थापनाका आदर्श किन्तु व्यावहारिक मार्ग बतानेवाले लेखों और भाषणोंका संग्रह किया गया है। आशा है हमारी राष्ट्रीय सरकारके समाजवादी समाज-व्यवस्थाके ध्येयको मूर्त रूप देनेमें यह पुस्तक सरकार और जनता दोनोंका सही मार्गदर्शन करेगी।

कीमत २-०-० डा० खर्च ०-१२-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

विषय-सूची

		पृष्ठ
खादी हुंडियां खरीदो	राजेन्द्रप्रसाद	२४९
शिक्षा क्यों और कैसे?	विनोबा	२४९
'नींवमें से निर्माण' — ६	मगनभाई देसाई	२५०
'प्रगतिको पीछे ठेलने' की गलत दलील	मगनभाई देसाई	२५२
तामिलनाडमें अस्पृस्यता	स्वामी आनन्दतीर्थ	२५४
मनुष्य मनुष्यकी हत्या नहीं कर सकता	विनोबा	२५४
भारत और अणुयुग	मगनभाई देसाई	२५६

www.vinoba.in